UNIVERSAL LIBRARY
OU_182051
UNIVERSAL LIBRARY

रूप बंगाल

और

दूसरे गीत

डा० मसूद हुसेन के हिन्दुस्तानी गीतों का संग्रह

रमेशचन्द्र मीतल के प्रबन्ध से
"मौडर्न प्रिंटिंग वर्क्स" अलीगढ़ में मुद्रित।

दो शब्द

यह ठेठ हिन्दुस्तानी के गीत हैं, इसीलिये हिन्दी उर्दू दोनों लिपियों में छापे जा रहे हैं।

इन गीतों के ताने बाने उस नये दिल ने तय्यार किए हैं जो हिन्दू, मुस्लिम और योरुपियन तीनों कलचरों का संगम है। इसलिए आशा है इन का रस सभी प्रान्त के निवासियों की प्यास बुझा सकेगा।

इन गीतों में जान बूझ कर एक ऐसी भाषा बरती गई है जिसे पंजाब से लेकर बंगाल और महाराष्ट्र तक के लोग अच्छी तरह समझ सकते हैं। इन रेखाओं में अगर राष्ट्र भाषा की झलक दिखाई दे जाये तो मैं समझूंगा कि कुछ काम हुआ।

गीतों में उर्दू की चालू बहरों (छन्दों) से काम लिया गया है। लेकिन इन में हिन्दी पिंगल की सारी आज़ादियों और अंगरेजी के टेकनीक की सभी अच्छी बातों को समोने की कोशिश की गई है। भाषा और छन्द को कुछ भूलें जान बूझकर की गई हैं।

यह गीत उसी गहरे विश्वास के साथ लिखे गए हैं जिस से गंगा जमुना मिलती हैं और जो कभी-कभी हमारे इतिहास के कुछ मोड़ों पर चमक उठता है। हिन्द के सभी भले लोग इसी के लिए जीते हैं और जान भी दे देते हैं।

१-६-४९
उर्दू विभाग
मुस्लिम यूनीवर्सिटी
अलीगढ़

—मसूद हुसेन

गीत

रूप बंगाल	...	...	१
बापू	...	...	२४
रंग दो ना, जीवन के कुछ पल	...	...	२६
क्यों सज-धज कर आऊँ	...	...	२७
सुंदरता के सागर से भर लाये विष की गागर		...	२८
आज सही इनकार	...	...	२९
शाम अवध की मेरा जीवन	...	...	३१
पाने प्रीत का राज	...	...	३२
हँस लेने दो प्रियतम दम भर	...	...	३४
भाग गईं जो मेरी खुशियाँ	...	...	३६
मैं कैसे आँख उठाऊँ	...	...	३८
प्रेम के हाथों मैं बिक जाऊँ	...	...	४०
मूरख ! उसको कैसे पाये	...	...	४२
वह बात !	...	...	४५
किये थे बन्द तुमने भी द्वार	...	...	४७
आग बगूला वह आये हैं मेरे आँगन		...	४८
आज तो शायद वह आजाये !	...	...	४९
बेहिस साहिल ! बेहिस साहिल !!		...	५०

आज किया मैं ने कुछ ऐसा	...	...	५२
याद की लहरों पर तुम आओ	...	...	५४
कब आयेगी मेरी बारी !	...	...	५६
याद	...	...	५८
अब होजाये सवेरा ।	...	...	५९
बढ़ता जाता है अँधयारा !	...	...	६१
किस ने जानीं	...	...	६२
जीवन पथ पर	...	...	६३
हिचकोले	...	...	६४
इस भीड़ में कैसे दर्शन हों !		..	६६
हिन्द माता से	...	...	६८
गुलामों का नाच	...	...	७०
ग़ज़ल	...	...	७३
ग़ज़ल	...	.	७४

रूप बंगाल

एक रूपक

मंजुल—बंगालन लड़की

अफ़ग़ानी—एक परदेशी

स्थान—बंगाल

रूप बंगाल

१

देश

"किस जादूगर का यह घर है ?
बंगला देश एक रंग-भवन
घने घने बांसों के जंगल
जिन में हवायें गाती मंगल
हरे भरे सब खेत और बन !
कृष्ण-वर्ण से भी कुछ गहरी
जिसकी धरती और गगन

रूप अनीला, नीला नीला
नदियों की यह रुपहली बाँहें
उजली उजली, फैली राहें
डाली डाली में आलिंगन

सोती लताओं में होती कानाफूसी सी,
फूल वनों में यह छिटकी छिटकी सी फबन !

देश भी नीला भेस भी नीला
फूलों की खुशबू से बोझल
मन्द हवा का आँचल
धान, धनक और सागर जल-थल !
पवन के झोंके हाँपते फिरते
वह टूटा सा चाँद का दर्पण !
सारे देश पर एक धानी आँचल सा फैला
एक उदासी, एक उदाहट
एक सपना सा, एक नशा सा,
खुले खुले सारे बंधन !

स्वप्नों से यह भरी हवायें
ऊदी ऊदी नीली घटायें
धान की हर बाली दूसरी बाली से
कान में कुछ चुपके से कहती

खेतों की कोरों से लगकर
दूर पर वह एक नदी बहती
धीरे धीरे !
एक सपना सा वह निकला हो ।
राधा की आँखों से जैसे !

एक सोया सा देश !
नींद की माती जिसकी नदियाँ
चुप चुप रोतीं, ग़म को सहतीं, बहती जातीं,
दर्द भरी सी, धीरे धीरे चलतीं मरी सी,
नयन में दुःख को घोले
जी में लाखों फफोले
मिलन की आस लिये चलती हैं हौले हौले

और कहां वह मेरे देश के चंचल कोहिस्तानी चश्मे
जिन में जीवन-लहर मचलती
पथरीले आँचल की ओट से जिनकी हँसी
नित्य फूट रही हो

मिलन की चाह नहीं है जिनको
अपनी ही परवाह है जिनको
उठते, बैठते, गिरते और टकराते चलते
लड़ते, भिड़ते, अकड़ते बढ़ते, शोर मचाते चलते
एक कोलाहल, बल खाते लहराते पल पल
आह ! वह मेरा चमकीला देश
ऊँची लहरें, तुन्द हवायें
ऊँचे पर्वत !
कड़ियल जैसे मेरी जवानी !

यहाँ की हर डाली लचकीली
फूल भी कैसे नींद के माते
चाँद भी चुप, तारे भी चुप चुप
कर्म से सब अनजान !
प्रेम से सब बेजान !

इस ठिठके आकाश को देखो !
देखो ! तारों की वह आखें

अपनी किरणों की पलकों से
धीरे धीरे, अनथक अनथक,
नित्य बुनती स्वप्नों के जाल!

है दुःख से भरपूर यह देश!
दुःख भरी आहें हर झाड़ी में
कमल कुम्हलाये बादल छाये
विरहिणी के नयनों से बरसते
प्रेम की पीर से ढीले अंग हैं
सोई सोई मन की तरंग है
कर्म का प्रेम से क्या संयोग!
प्रेम तो बंगला देश का रोग!

बंगला, देश तो प्रेम की भूमि, राग की भूमि, रंग की भूमि
कर्म की भूमि से जो आते
सब खोकर कुछ पाते
मैं परदेसी कोहिस्तानी

एक चमकीले देश का वासी
इस स्वप्नों के धानी देश में
किसके रूप की चाह है मन में ?"

२

रूप

मंजुल, वह बंगाल का जीवन
जिसके रूप अनूप के कारण
बंगला देश है कृष्ण-बरन

वह थी नीले देश की सुन्दरी
उसका जोबन—
काले केस कलस और काजल!
जामुनी होंठ रसीले
नैन हठीले
ढीला अंग—बदन की रंग-तरंग
आबी सारी से छिटक रही थी
महक! वह केसर तन की, होश उड़ाये
आँखें! रंग की एक पिचकारी
जैसे दिन से आँख-मिचौनी

खेलती हो अँधियारी!

बंगला देश की सुन्दर बाला!
उसके गले में
कोमल कमलों की एक माला
अंग अंग में चहकार
होंठ भी लाल अनार
आँखों में एक उलझी बोली
मुख में भरी हुई झंकार!
ढला ढलाया रूप
जैसे चाँद की धूप
या जैसे संगीत
कवि "मसूद" का गीत।
काले केस, झुकी झुकी सावन की घटायें
नयी तुली मुसकान, बनी हुई अनजान
पवन सी डोलती फिरती इधर उधर
वह—
शाम की पलकों में सोती थी
शबनम से मुँह को धोती थी

लहरों से नित्य खेल था उसका
चिड़ियों से कुछ मेल था उसका
खुशबू पीती, हँस हँस जीती,
लेकर मन में प्रेम की उलझन
पलकों की झालर से कुछ मोती बरसाती
मतवाली नीलम प्याली से मद छलकाती

एक कली जो—
बादलों के सायों में पल कर
निखर उठी हो!
राग की आग थी जिस के मन में
धुली धुली निथरी सी आखें
तीखे चितवन—जिन में था एक नर्म लचाव

चाहत, चाह, चुहल और चाव
उचपल, चंचल, एक स्वभाव
ठिठक ठिठक अठखेलियाँ करती
चाल में नृत्य के भाव

खेलती थी कानन कानन में
फूलों के कुछ सुन्दर खेल
केवल कलियों से था मेल!

आँख नशीली, बात रसीली
आँखें! जिनमें लाखों सपने
सागर, लहरें, झीलें—ऊदी घटायें
राधा कृष्ण की आँख-मिचौनी!

धानों के खेतों की रूह थी, महक रही थी
बाँसों के जंगल की बाला, चहक रही थी
प्रेम का अमृत पी पी कर वह पली बढ़ी
उस के दिल में बंद कली का राज़!
बोल सुरीले—प्रेम अथाह
परदेसी कोहिस्तानी को थी सागर की चाह!

१

एक शाम

मंजुल के सिर से एक शाम
ढलक गया था उसका आँचल
कजलाया सूरज भी उसदम
धुआँ धुआँ सा हवा में बादल
उतरा उतरा शाम का चेहरा
उखड़ रही थीं उसकी साँसें
टपक रहा था क्षितिज का सोना पिघल पिघल !

डूबते जी से
मंजुल के कुछ पास आकर अकुलानी बोला —
"वह देखो ! आती है अल्हड़ रजनी-बाला

टँके हुए रत्नों से भारी उसका आँचल
माँग भरी सी
आँख डरी सी
साँस दबाये
चुप चुप मुस्काती, महकाती
अलहड़ रजनी बाला आती
प्रेम की लहरी, कर्म की बैरी!'

जैसे एक भरन सावन की
मंजुल हँस कर यूं बोली—
"मेरे ज्ञानी, कोहिस्तानी!
देखो! शाम का लुटता सुहाग
तुम कहते होगे न उठेगा इसकी चिता से
एक भी राग।
आह, सुनो! जीवन का संगीत है जलना!!
लेकिन तुम आपे के पुजारी
शाम का राग न सुन पाओगे
आज सुनो!

शाम अवध की मेरा जीवन
यूंही जलता सा मेरा मन !

शाम की गहरी लम्बी साँसे
मेरे जीवन का सूनापन
शाम के पंछी का कुछ गाना
जैसे दिल की मध्यम धड़कन
शाम के आँचल में कुछ तारे
तारों से पुर मेरा दामन

शाम अवध की मेरा जीवन
मिटता जाता पल पल क्षण क्षण

तुम परदेसी कोहिस्तानी, कर्म के पुतले !
बंगालन के गहरे जल-थल मन को क्या समझोगे
कर्म तो प्रेम की है एक मंजिल !
कर्म जीवन की है वह चोटी
एक झलक आँखों में भर लो जिस से प्रेम-नगर की
प्रेम-नगर में मिटना हर प्रेमी का हक़ है
डूबते सूरज की सौगंध !

४

नाव में

"नदिया !

बहना, धीरे धीरे

मंजुल जायेगी पार

एक कँवल के फूल सी किश्ती

कितनी तेज है धार !

लेकिन मैं हूँ नाव का माँझी

मेरा इशारा, रुकेगी धार।

ऐं ! मंजुल तुम रोती क्यों हो ?

मैं हूँ तुम्हारे साथ

कोहिस्तानी—कर्म का पुतला"

"छोड़ो मेरा हाथ!
तुम रोकोगे इस धारे को!—क्या बात!
प्रेम में डूब रहा है यह मन
लादो मुझको भँवर के कंगन
बात की तह तक तुम पहुँचोगे?
ढूँढते हो हर बात में थाह
प्रेम नदी है अथाह!
तुम कहते हो मैं हूँ मांझी
नाव का मांझी तो दरिया है!
कंवल पे शबनम क्यों इतराये?"

"मंजुल! तुम शबनम हो, लेकिन
मेरे गागर में है सागर!
ओ बंगाल की मन्द हवाओ
तुम में नहीं यह जान
कली में हो मुसकान
मंजुल के जी में आजाये जीने का अरमान"
"चुप नादान!
सुन तू एक गान"

पाने प्रीत का राज
चलदी नैया छोड़ किनारा

निर्मल जल में है एक हलचल
उठ उठ लहरें देखतीं पल पल
सिमटे है साहिल का आँचल
चलदी नैया तेज़ है धारा

छोड़ के पीछे कूल किनारे
तोड़ के अपने बंधन सारे
चलदी आशाओं के सहारे
दूर! जहाँ है रोशन तारा

दूर—जहां कुछ रंग घुले हैं
सागर और आकाश खड़े हैं
प्रेम में होंठ से होंठ मिले हैं
लौट री पगली! चूम किनारा

पाया प्रीत का राज

"माझी घाट को लौट चलें अब।"

५

बांसों के जंगल में

बांसों के बन में है मर-मर
(अमर मुरलिधर, अमर मुरलिधर !)
थिरक रहा है पत्ता पत्ता

मंजुल आज नृत्य पे माइल
पत्ता पत्ता बूटा बूटा तकता है राह उसकी
वह संगीत नृत्य की रानी
आई आखिर अहले गहले
अगणित स्वरों में बजा महावन

मंजुल के पैरों को पवन ने अब थपकी दी
बदन सारी में फिर लहराया
पाव की गति में जोर सा आया
फूलवनों में घुमड़ उठी एकबार हवायें

वन के पौधे पौधे ने बल खाया
पेड़ों का भी सिर चकराया
अफ़गानी चिल्लाया !
"बस, मंजुल बस !
मैं तेरे चरणों में बेबस
नृत्य, प्यारी है एक बड़ा ही सुन्दर पाप !"

"पाप !—कहा क्या"
मंजुल ने अञ्जलि में कुछ गंगाजल लेकर
मारा परदेसी के मुंह पर
"यह है, प्रेम का पान, नृत्य सोपान
परदेसी प्रियतम !

तुम सहराई, कोहिस्तानी
क्या सहरा में नाच नहीं होता ज़र्रों का ?
तुम संगीत, नृत्य के मुनकिर !
काया की झंकार नहीं यह
तन तो मन के साथ थिरक उठता है

और नृत्य के हर चक्कर पर
झड़ जाती है इस तन की थोड़ी सी राख !
नृत्य से तन सोता है जागता है मन ॥

६

आमों के कुंज में

किरणों से उकताई
मंजुल आमों के कुंज में आई
कासनी नीले फूल यहां खिलते हैं
कलियाँ जो में चाह की गांठ लिये बैठी हैं
उँघती छाओं में कुंजों की
प्रेम बढ़ता है एक लता सा
सदियों से होता आया है इन में
प्रेम-व्यापार
किसी की जीत, किसी की हार !
मंजुल हर प्रेमी को इन में खींच के लाती
थपक थपक कर उसे सुलाती—और गाती—

वह है जितना ज्यादा रोशन
उतने गहरे मेरे साये
आस-किरण जो आती छन छन
इन सायों को क्या चमकाये
उसका उलटा पर यह जीवन
रोशन जितना वह हो जाये
होंगे उतने गहरे साये !

"बस तो ऐ परदेसी प्रियतम
यह जीवन तो उलटा पट है
और तुम हो किरणों के रसिया
इन कुंजों से घबराते हो
लेकिन खुद जीवन है साया
हलका हलका एक धुंधलका
उसको हर दम घेरे रहना
सारी उजली राहें जिसमें खो जाती हैं जाकर
जैसे माँग मेरे बालों में !

तुम मेरे साये बन जाओ
खुद को खोकर मुझको पाओ

× × × ×

× × × ×

"मंजुल ! मंजुल !! ठहरो ! क्यों मिटती जाती हो ?"
चिल्लाया परदेसी उसको देख के सायों में
फिर मिटते

एक मिटती आवाज यह आई
"कर्म के पुतले !
करदो अपने बंधन ढील
मंजुल को सायों में ढूंढो
और उसके साये बन जाओ
ख़ुद को खोकर उसको पाओ !..."

(अफ़ग़ानी गाता हुआ आमों के कुंजों में मंजुल के पीछे ग़ाइब हो जाता है)

आज किया मैंने कुछ ऐसा
खुद को खोया, उसको पाया
मिल जाऊँगा उस से, या फिर
बन जाऊँगा उसका साया !

जिस जिस रुख वह मुख को फेरे
हर हर पल मैं उसको घेरे
साथ रहूंगा, साथ फिरूंगा
रोशन जितना हो जायेगा
हो जाऊँगा उतना गहरा !

जितना मुझ से घबरायेगा
लिपटे जाऊँगा चरणों से
एक पल फिर ऐसा आयेगा
एक रोशन पल ! जब वह मुझको
अपने सीने में भर लेगा !!

बापू

यह किसने ज़हर पिया !

तुझ को जिलाने, मुझ को जिलाने
दौड़ पड़ा वह बात निभाने
जीवन दान दिया
यह किसने ज़हर पिया !

बिछुरे जाते थे दीवाने
बीच में आया सब को बचाने
हँस हँस घाव लिया
यह किसने ज़हर पिया!

१

जिसकी हत्या में भी था हित
शाइर की आँखों ने अमृत
उसको नज़र किया
यह किसने ज़हर पिया!

१

रंग दो ना, जीवन के कुछ पल!
प्रेम चुभन से मैं उलझन में
अमृत-रस होकर तुम बरसो
उतरो एक किरण बन मन में
फिर यह शीशमहल हो झल झल
रंग दो ना, जीवन के कुछ पल!

चंचल मन तो चाह से पागल
कौन करे पर राहें रोशन
विरह की अग्नि तुम ही भरदो
कर दो मन में चिताएँ रोशन
जीवन में फिर कर दो हलचल
रंग दो ना, जीवन के कुछ पल!

२

क्यों सजधज कर आऊँ ?

सुबह की दुलहिन शरमाती सी, सजधज कर जो आती
कौन मिला क्या पाती ?
रात की देवी आंखों आंखों में किस किस को बुलाती
सोया प्रेम जगाती !
किसने, कब पाया है किसको, जो मैं उनको पाऊं !
क्यों सजधज कर आऊँ ?

किस की छवि सीने में भरने कली खड़ी मुस्काये ?
हँसते आँख भर आये !
देखो ! साहिल के चरणों को लहर भी चूम न पाये
भँवर बन रोती जाये !
किस बिरते पर, फिर किस आस पे उनको आज रिझाऊँ ?
क्यों सजधज कर आऊँ ?

३

सुंदरता के सागर से भर लाये विष की गागर!
"मसूद" कठोर तुम्हारा मन है
बिन तारों का एक गगन
इस में प्रेम के जुगनू छोड़ो, जाओ लाओ जाकर
सुन्दरता के सागर से भर लाये विष की गागर

प्रेम-भिखारी! यह कड़वापन!
पैने बोल और तीखे लच्छन
प्रेम से तो मन कंचन होता, सुन्दरता से उजागर
सुन्दरता के सागर से भर लाये विष की गागर

मूरख! तू यूं जी पायेगा?
सोच तो, विष को पी पायेगा?
उन होठों से क्या न मिलेगा रस तुमको प्याली भर!
सुन्दरता के सागर से भर लाये विष की गागर!

(४)

आज सही इनकार !
लेकिन कुछ तो बोल
इन होंठों को खोल
जो कर हैं प्यार
आज सही इनकार !

खोल दे लाल द्वार
है बस इतनी चाह
रख दे (क्या परवाह)
हर हर बोल पे धार
आज सही इनकार !

सब मानी बेकार
बोलों को मत तोल
होगा स्वर का मोल
मुख को बस झंकार!

आज सही इनका!

५

शाम अवध की मेरा जीवन
यूंही जलता सा मेरा मन!
शाम की गहरी लम्बी सांसें
मेरे जीवन का सूनापन
शाम के पंछी का कुछ गाना
जैसे दिल की मध्यम धड़कन
शाम के आंचल में कुछ तारे
तारों से पुर मेरा दामन
शाम अवध की मेरा जीवन
मिटता जाता पल पल क्षण-क्षण!

६

पाने प्रीत का राज
चलदी नैया छोड़ किनारा
निर्मल जल में है एक हलचल
उठ लहरें देखतीं पल पल
सिमटे हैं साहिल का आंचल
चलदी नैया, तेज है धारा

छोड़ के पीछे कूल किनारे
तोड़ के अपने बंधन सारे
चलदी आशाओं के सहारे
दूर ! जहां है रोशन तारा

दूर—! जहाँ कुछ रंग घुले हैं
सागर और आकाश खड़े हैं
प्रेम में होंठ से होंठ मिले हैं
लौट री पगली! चूम किनारा
पाया प्रीत का राज!

७

हँस लेने दो प्रियतम! दम भर
हँस भी न पाई थी बिजली
भर आया बादल का जी
गिर गये उसके आँसू झर झर
हँस लेने दो प्रियतम दम भर

दीपक भी कहता था यही
पल भर को आई थी हँसी
आ गये कितने आँसू घिरकर
हँस लेने दो प्रियतम दम भर

दम गहरा लेती थी कली
होंठों पर थोड़ी सी हँसी
आगये उसके आँसू भर भर
हँस लेने दो प्रियतम दम भर !

८

भाग गईं जो मेरी ख़ुशियाँ !
सावन के बादल में झमकें
तारों की आँखों से चमकें
चाँद के माथे पर वह दमकें
भाग गईं जो मेरी ख़ुशियाँ !

कलियों के होंठों पर झलकें
या उनकी आँखों से छलकें
पलकों पर नाचें फिर ढलकें
भाग गईं जो मेरी ख़ुशियाँ !

चंचल लहरों में वह लहक

फूलों के गालों से महक

बन नन्हीं चिड़ियाँ वह चहक

भाग गईं जो मेरी ख़ुशियाँ !

लँठोब

९

मैं कैसे आँख उठाऊँ !
गिर जायेंगे मोती सारे
कितने चन्दर कितने तारे
जिनको पलकों में उलझाऊँ
मैं कैसे आँख उठाऊँ !

राम जब खेलता है नस नस से
भर आती है दुःख के रस से
यह नीलम प्याली !—छलकाऊँ ?
मैं कैसे आँख उठाऊँ !

दया-नदी तेरी शरमाये

मेरी आँख अगर भर आये

इसमें सब संसार डुबाऊँ

मैं कैसे आँख उठाऊँ !

हम्वाजीव

१०

प्रेम के हाथों में बिकजाऊँ
देखती हूँ यह राह
लोग जो दोष लगाते मुझको
वह क्या जानें चाह

रसमों के फन्दे लेलेकर
फाँसने आयें, मुझको डरायें
यह मूरख पर कैसे पायें!
मेरे मन की थाह!
प्रेम के हाथों मैं बिक जाऊँ
देखती हूँ यह राह

दोष लगादें, वह जो चाहें
(लेकिन क्या परवाह)
जो मूरख हों वह क्या जानें
प्रीति की रीति को ! आह !!

खत्म हुआ जाता है मेला
मोल न कर पाये वह मेरा
प्रियतम ! यह मन तो बस तेरा
तेरी एक निगाह !
प्रेम के हाथों में बिक जाऊँ
देखती हूँ यह राह

११

मूरख ! उसको कैसे पाये ?
मन को उजाड़ा ?
मन में बसाया ?
उसको रिझाया ?
गीत भी गाया ?
अपने मन का
मैल बहाया ?
फिर तू उसको कैसे पाये ?

तन, मन काता ?
प्रेम का, मूरख !
जाल बुना क्या ?
उसको तू ने

सोच के चाहा
करके चाहा ?
फिर तू उसको कैसे पाये ?

ख़ुद को तपाया ?
पिघलाया क्या ?
उसको पाने
ख़ुद को गंवाया ?
क्या तू ने—
उसको चमकाया
बन कर उसका
गहरा साया ?
फिर तू उसको कैसे पाये ?

कितने गहरे
उसके इशारे !!
तुझको गिराया
उसने गिराकर

तुझको उठाया
उसकी अदा को
जान भी पाया ?
मूरख ! उसको वैसे पाये ?

१२

वह बात

यह क्या कहते हो तुम प्रियतम!
ख़त्म हुई वह बात
फूल के कान में जो भँवरे ने
गुन गुन करके गाई
मुख से कह न सका जो तुम से
आँखों ने बतलाई
ख़त्म कहाँ वह बात
वह चलती दिन रात

हम दोनों का जीवन उसके—
सामने एक परछाईं
वक़्त की चुप चुप बहती घड़ियाँ
उसको नाप न पाईं
खाई मात पे मात!
ख़त्म कहाँ वह बात

११

किये थे बन्द तुमने भी द्वार!

भिकारी मन कितना ललचाया

खोकर यह कितना पछताया

कितना चाहा पर नहीं आया

रहम तनिक—पाता क्या प्यार!

बेबस होकर यह लाचार

पिघल गया मेरी आहों से

उबल पड़ा मेरी आँखों से

डुबो रहा है कुल संसार

खड़े हो तुम कितने लाचार

किये थे बंद तुमने भी द्वार!

१४

(आज दोपहर)

आग बगूला वह आये हैं मेरे आँगन !

हर हर साँस लपट उनकी हैं मुख दहकाये
काँप रहे हैं तहख़ानों में सिमटे साये
कौन बचाये ! थर थर काँपता है पापी मन

झलकाते थे सुबह जो हँस हँस अपना चंदन
हाथ में लेकर जो आये थे प्रेम का दर्पन
सतरंगी दामन था जिनका, मुख था रोशन

आग बगूला वह आये हैं मेरे आँगन !

१५

आज तो शायद वह आजाये !
वरना क्यों हटते यह साये
क्यों हँसती यूं सुबह की दुलहिन
डालके मुँह पर काली जाली
और क्षितिज के इन होंठों पर
क्यों होती पतली सी लाली
लाल तिलक माथे पे रचाये
आज तो शायद वह आजाये !

आज मुझे जग-मग कर देगा
प्रेम का रस रग रग भर देगा
चंचल चाहों की नैया को
देखना ! वह डग-मग कर देगा
वरना क्यों हटते यह साये
आज तो शायद वह आजाये !

१६

बेहिस साहिल! बेहिस साहिल!!
कैसी चोट लगाई
दूर से लब पर बोसा लेकर
इन चरणों तक आई
क्यों सिमटे हैं तेरा आंचल
मेरे आँसू करते छल छल

मैं बेकल चाहत से पागल
लेकर अपने मन में हलचल
खिल खिल हँसती खेलती आई
बेहिस! कैसी चोट लगाई
मेरे आँसू करते छल छल!

उठ उठ फिर फिर करती कल कल
उछल उछल कर देखती पल पल
रह रह रोती होती वापिस
साहिल बेहिस, बेहिस, बेहिस····

१७

आज किया मैंने कुछ ऐसा
खुद को खोया उसको पाया
मिल जाऊँगा उस से, या फिर
बन जाऊँगा उसका साया

जिस जिस रुख वह रुख को फेरे
हर हर पल मैं उसको घेरे
साथ रहूँगा, साथ फिरूँगा
रोशन जितना हो जायेगा
हो जाऊँगा उतना गहरा !

जितना मुझ से घबरायेगा
लिपटे जाऊँगा चरणों से
एक पल फिर ऐसा आयेगा
एक रोशन पल ! जब वह मुझको
अपने सीने में भर लेगा !!

१८

याद की लहरों पर तुम आओ !
सोच में आँख है, सोच में है मन
मन की सोच बने जब उलझन
उस दम इन आँखों में छिपकर
तुम आँसू बन कर शरमाओ
याद की लहरों पर तुम आओ

जब यह दिल हैरान पड़ा हो
गुम सुम सा सुन-सान पड़ा हो
अधरों पर बंसी को धर कर
एक मचलती तान उड़ाओ
याद की लहरों पर तुम आओ !

मुश्किल थप है, चंचल रथ है
नाथ! बहुत ही मुश्किल पथ है
राह कठिन यह कट भी सकेगी
विरह की आग को फिर सुलगाओ
याद की लहरों पर तुम आओ!

१६

कब आयेगी मेरी बारी !

जीत सदा होती है तुम्हारी
प्रियतम रीति यहां की न्यारी
तुमने जब जब बाजी खेली, मैंने हँस हँस हारी
कब आयेगी मेरी बारी ?

प्रियतम ! जीत है एक बीमारी !

मेरे मन में है एक धड़कन
मेरी आँखों में गीला-पन
काम तुम्हारे क्या आती है जीत की यह बेकारी
प्रियतम जीत है एक बीमारी

आओ खेलें बारी बारी

जीत तुम्हारी, हार हमारी

हार हमारी, जीत तुम्हारी

वार पड़े दोनों के यकसां, और पड़ें दोनों के कारी

आओ खेलें बारी बारी!

याद

आई याद की आज हिलोर!

बीते समय से
लहर एक जैसे
बह निकली हो कोर
आई याद की आज हिलोर

जिस के आते—
ही मिट जाते
आज और कल के छोर
आई याद की आज हिलोर

जिस पर बहता
मैं आऊँगा !
प्रियतम ! तेरी ओर
आई याद की आज हिलोर !

२१

अब हो जाये सवेरा!

यह बिखरे बिखरे से तारे!
कौन जिये अब इन के सहारे
चारों ओर अंधेरा
अब हो जाये सवेरा

सोती जागती रात की रानी!
क्यों कहती है चाँद जवानी
बीते समय की प्रेम-कहानी
कहदो उठाले डेरा
अब होजाये सवेरा

हट जाओ ऐ चाँद, ऐ तारो!
मेरे प्रियतम को आने दो
लौ दे उट्ठेगा फिर देखो!
सारे क्षितिज का घेरा
हो जायेगा सवेरा!!

२२

बढ़ता जाता है अंधियारा!
बुझते जाते है सब दीपक, डूब रहा है एक एक तारा
घिर कर गहरे अन्धियारे से
प्रेम की बिजली तड़पे चीखे
बढ़ते अंधियारे से लेकिन कौन उसे अब दे छुटकारा?
बढ़ता जाता है अंधियारा।
आस का जुगनू क्या चमकाये
गहरे गहरे जीवन साये
रूह का पंछी इनमें फिरता, भटका भटका मारा मारा
बढ़ता जाता है अंधियारा!

६३

किस ने जानीं ?
उन आँखों की
बे बोलों की बातें
सोच के आये
जो, सब भूले
उनकी अनोखी घातें
उन से पल में
हो जाता है
कुछ जीतें कुछ मातें

जीवन पथ पर

चल चल कर जब थक थक जाते
तुम याद आते
चाहत इसकी, चाहत उसकी
हर हर पल एक नई खुशी सी
हँस हँस कर जब कुछ नहीं पाते
तुम याद आते

इसको पालूँ, उसको पालूँ
तारे छूलूँ, चाँद को जालूँ
गिर कर पर जब उठ नहीं पाते
तुम याद आते

इस से खेलूँ, उस से खेलूँ
उस को लेकर, इस को लेलूँ
पाकर भी जब कुछ नहीं पाते
तुम याद आते

२५

हिचकोले

रोशन चन्द्र !

मैं एक गहरा सागर
जिसके सीने पर कुछ लहरें
(मन की तरंगें)
बन बन हँस हँस खेलें
मिट जाने को !

चूम सकें यह चांद को कैसे ?
उछल उछल कर
उठें पल पल
केवल
गिर जाने को !

काया से जब छू नहीं पाता
दूर रहो तुम
लेकर चाह—अथाह तुम्हारी
हो जाता अपने में गुम!
मेरे सीने में फिर तुम!!

२६

इस भीड़ में कैसे दर्शन हो ?

मैं क्षुद्र सा एक भटका राही
आया हूं देता प्रेम-दुहाई
डर है किसी से आज न उसके कारण मुझ से अनबन हो
इस भीड़ में कैसे दर्शन हो ?

हम देखना चाहें देख न पायें !
भीड़ में भी घुसकर पछतायें
तू ही बता यह क्षुद्र करें क्या, ऊँचों का जब शासन हो
इस भीड़ में कैसे दर्शन हो ?

अब नैन में दर्शन-प्यास लिये
और मन में कोमल आस लिये
हम खड़े रहेंगे आज तेरे आँगन में चाहे सावन हो
इस भीड़ में कैसे दर्शन हो ?

हिंद माता से

(स्व० सरोजिनी नायडू की एक अंग्रेज़ी कविता का अनुवाद)

जाग, माता जाग!

बालक तेरे, तुझको घेरे, खड़े हैं सीस नवाये
तेरी पूजा, तेरी सेवा करने यह सब आये!
ऐ माँ! तू सोती है अब तक हाथ अपने बंधवाये
उठ और देख! कि अंधियारी में है स्वप्नों की आग
जाग, माता जाग!

उठ और तोड़ भी दुःख के बंधन, दुखी हैं जिन से सब जन
कर आज़ाद तू इन हाथों को, जीत इन्हें है बुलाये
ऐ माँ! क्या हम तेरे नहीं हैं? कौन तुझे समझाये
तेरी आत्मा ही का बल और त्याग है अपना भाग
जाग, माता जाग!

तू ही बता यह हम से होगा, तुझको भूलें भुलायें
मन-मन्दिर जब तेरा घर है, घर में क्यों न बुलायें
छातियाँ तारों की धड़कादें, गायें वह यश के राग
आज सुहाग लहर आई है, खुलेंगे तेरे भाग
जाग, माता जाग!

हिन्दू: माता! पूजा के फूलों से हमने तुझको सजाया
पारसी: आशा के शोलों का माता! हमने हार पिन्हाया
मुसलमान: ऐ माँ प्रेम की तलवारों से हमने तुझे बचाया
ईसाई: धर्म का मीठा बोल तो माता हम ने तुझे सुनाया

सब मिलकर: हम ही सब के प्रेम के फूलों से है तेरा सुहाग
सुन ओ रानी! सुन ओ देवी!! गाते हैं तेरे राग
जाग, माता जाग!

गुलामों का नाच

(अगस्त सन् ४२)

खी, खी, खी, खी, खी!
मेरे अन्दर
आज हँसी फिर माता काली
'सात प्यासें' जाग उठी है
इस तन में
नाच रहा है मन भैरव को
हर हर गत पर
लेकिन कैसे भर पाऊँगा
सातों खप्पर
खून कहाँ है, सोच यही
खी, खी, खी, खी, खी·····

सब से बड़ा है तेरा खप्पर
बूढ़े दादा ?
मुँडों को भी तू है चाहता
ताकि बनाके इनकी माला
डाल गले में नाचे, आहा !
क्योंकि तेरे खून में नाची थीं इनकी तलवारें !
अब जी भर के नाच
और जी भर के पी
तेरे साथ तेरे क़दमों पर
नाचेंगे हम भी !
खी, खी, खी, खी, खी……

रोक सकें क्या यह ज़ंजीरें
यह तो देंगी ताल
नाचो, नाचो ! सातों नाचें
एक चक्कर में
इस मैदाँ से
हिन्दुस्ताँ से

बच के न जाये कोई भी ?

खी, खी, खी, खी, खो······